Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAR-APR 2023, VOL- 10/76

प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)'' योजना की बेरोजगारी उन्मूल में भूमिका : जनपद मेरठ (उ० प्र०) के विशेष सन्दर्भ में

भूपेन्द्र कुमार, Ph.D.
एसोसिएट प्रोफेसर– अर्थशास्त्र वी० वी०(पी० जी०) कॉलेज शामली, उ० प्र०

Paper Received On: 21 APRIL 2023
Peer Reviewed On: 30 APRIL 2023
Published On: 01 MAY 2023

Abstract

बेरोजगारी की समस्या को हल करने अथवा कम करने के लिये भारत सरकार ने सम्पूर्ण राष्ट्र में शिक्षित बेरोजगारी उन्मूलन हेतु '' प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)'' का शुभारम्भ एवं क्रियान्वयन 31 मार्च 2008 तक संचालित प्रधान मंत्री रोजगार योजना (PMEY) एवं ग्रामीण रोजगार सृजन कार्यक्रम (REGP), 15 वें वित आयोग चक्र अर्थत् वर्ष 2021–22 से 2025–26 तक, पाँच वर्षों तक के लिए लागू किया गया है। जनपद मेरठ में, उद्यमियता विकास एवं स्वरोजगार सृजन में, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP), योजना की भूमिका सार्थक एवं महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम , सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय द्वारा संचालित एक केन्द्रीय क्षेत्र योजना है। राज्य स्तर पर प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम का संचालन के० वी० आई० सी०, के० वी० आई०बी० एवं डी० आई० सी० , कॉयर बोर्ड एवं बैंकों की सहायता से संचालित की जा रही है।

पारिभाषिक शब्दावली: *उद्यमियता विकास, बेरोजगारी, रोजगार सृजन, कौशल प्रशिक्षण, उद्यम, ।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

शोध पद्धति : शोध की प्रकृति एवं अध्ययन के उद्देश्यों की दृष्टि से विश्लेषणात्मक (Analytical) शोध अभिकल्प को चुना गया है। उद्देश्य पूर्ति हेतु 200 निदर्शितों का चयन, जनपद मेरठ (उ० प्र०) से किया गया है।

उद्देश्यः प्रस्तुत शोध कार्य का मूल उद्देश्य *'' प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)''* के अन्तर्गत संचालित प्रशिक्षण केन्द्रों पर प्रशिक्षण गुणवत्ता एवं सार्थकता का परीक्षण करना है।

परिकल्पनाः

(1) *''प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)''* **की सामान्य नागरिकों के स्वावलम्बन में महत्वपूर्ण भॅमिका है।**

(2) *''प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)''* **की शिक्षित बेरोजगार युवाओं में उद्यमियता के विकास में सार्थक भूमिका है।**

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्राथमिक तथ्यों का विश्लेषण एवं परिलब्धियाँः ''प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP)'' बेरोजगारी उन्मूलन में लाभकारी ही नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में, आत्मनिर्भर राष्ट्र के निर्माण में एवं युवाओं के राष्ट्रीय विकास में योगदान को बढ़ाने में भी सहायक है।

प्रस्तुत शोध कार्य के सम्पादन में उ0 प्र0 के जनपद मेरठ के 200 लाभार्थियों से प्रत्यक्ष पूछ–ताछ विधि से प्राथमिक तथ्यों का विश्लेषण संकलन किया गया है। निम्न तालिका (1) प्रश्नगत सम्बन्ध में निदर्शितों के अभिमतों पर प्रकाश डालती है –

तालिका (1) : ''क्या प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम ; शिक्षित बेरोजगारी के उन्मूलन एवं स्वावलम्बन में सहायक है?'' – सूचनादाताओं के अभिमत (गटमैन के द्विआयामी मनोवृत्ति मापक के आधार पर)

तालिका (1)

क्रमांक	बेरोजगारी उन्मूलन के प्रति अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	शिक्षित बेरोजगारी के उन्मूलन एवं स्वावलम्बन में योजना सहायक है। **(हाँ)**	168	84.00
2	शिक्षित बेरोजगारी के उन्मूलन एवं स्वावलम्बन में योजना सहायक नहीं है। **(नहीं)**	32	16.00
	योग	200	100.00

प्रस्तुत तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रशिक्षित कुल 200 लाभार्थियों में से 168 (84.00 प्रतिशत) लाभार्थियों ने स्वीकार किया है कि यह योजना **''बेरोजगारों की समस्या''** के समाधान में सहायक है; जब कि मात्र 32(16.00 प्रतिशत) लाभान्वितों के अभिमत नकारात्मक रहे हैं। **इन आनुभविक तथ्यों से स्पष्ट है कि '' प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम शिक्षित बेरोजगारी के उन्मूलन एवं स्वावलम्बन में सहायक है।''**

सूचनादाताओं से पुनः प्रश्न किया गया कि ''क्या प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम आर्थिक स्वावलम्बन में भी सहायक है?'' सूचनादाताओं के अभिमत –

तालिका (2): अभिमत सूचनादाताओं के अभिमत

क्रमांक	सूचनादाताओं के अभिमत	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	हाँ	162	81.00
2	नहीं	16	08.00
3	उदासीन अभिमत	22	11.00
	योग	200	100.00

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निम्न तालिका (3) की साँख्यकीय गणनायें करने पर χ^2 (Chi-Square value) , **0.782** प्राप्त होता है; जो कि स्वातंत्र्य कोटि–2 एवं पी0 मान (p-value)–5 प्रतिशत (0.05) के लिये χ^2 के निर्धारित मान 5.991से अत्यन्त कम है। अतः **परिकल्पना को निरस्त नहीं किया जा सकता है।** उपरोक्त परिकल्पना के सत्यापन के लिये तालिका के प्राथमिक तथ्यों को भी दृष्टिगत रखा गया है। **परिकल्पनायें** सत्य एवं सार्थक पायी गई है।

तालिका (3)

	लिंग	हाँ	नहीं	योग(χ^2)
F_0	पुरूष	89	11	0.391
F_e		86	14	
$F_0 - F_e$		03	2	
$(F_0 - F_e)^2/F_e$		0.105	0.286	
F_0	महिला	83	17	0.391
F_e		86	14	
$F_0 - F_e$		03	2	
$(F_0 - F_e)^2/F_e$		0.105	0.286	
		(Chi-Square value) χ^2	स्वातंत्र्य कोटि – 2 पी0 मान – 5 प्रतिशत (0.05) के लिये निर्धारित χ^2 मान 5.991	0.782

निष्कर्षः इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के आलोक में प्राप्त निष्कर्ष निम्नवत है–

(1) ' **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम** ' निर्धनता की सीमारेखान्तर्गत जीवनयापन करने वाले निर्बल वर्गो के सामाजिक–आर्थिक विकास में सहायक है।

(2) ' **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम** ', अतिरिक्त रोजगार के साधन सृजित करने वाले निर्धन परिवार; दैनिक आय में वृद्धि हो जाने के कारण ''निर्धनता की सीमारेखा'' पार करने में सक्षम हुए हैं। ऐसा होने से उनमें आत्म विश्वास जागा है। इस प्रकार यह योजना निर्बल वर्गो के विकासोन्मुख रचनात्मक भूमिका निभा रही है।

(3) राष्ट्रीयकृत बैंकों के योगदान से, योजनान्तर्गत ऋण लाभांश (अनुदान तथा किस्तों में) प्रदान करके निर्धन परिवारों में लघु व कुटीर उद्योग धन्धों को स्वरोजगार के रूप में स्थापित करने एवं विकास हेतु संसाधन सुलभ कराने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

(4) यह योजना, ग्रामीण निर्धनता व बेरोजगारी उन्मूलन में सहायक सिद्ध हो रही है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(5) राष्ट्रीयकृत बैंकों ने रोजगारों की स्थापनाओं के लिए बिना प्रत्याभूति के, ऋण अनुदान पर प्रदान करके निर्धनता की सीमारेखा के नीचे जीवन जी रहे लोगों में स्वर्ण जयन्ती स्वरोजगार योजना के प्रति जागरूकता एवं रूझान पैदा किया है इसलिए सहभागिता में वृद्धि हो रही है।

(6) इस योजना का ''समूहगत दृष्टिकोण'' लघु तथा कुटीर उद्योग धन्धों सम्बन्धी उद्यमों की स्थापनाओं एवं रोजगार के अतिरिक्त संसाधनों के सृजन में सहायक व सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

(7) **'प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम'** के सुचारू संचालन तथा क्रियान्वयन में वित्तीय तथा प्रशिक्षण संस्थाएं (बैंकें व ट्रेनिंग पार्टनर्स) सहयोगी भूमिकाएं निभा रहे हैं।

संदर्भ

वर्मा के0 डी0 (2009) ; भारत के शिक्षित युवा चौराहे पर, 'राष्ट्रीय सहारा' समाचार पत्र, दिल्ली प्रकाशन, 30 जुलाई 2009

मिश्रा रूद्दत्त (2008) ; नौकरी नहीं काम ढूँढना होगा, हस्तक्षेप डैस्क (पत्रिका) जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी दिल्ली, 30 सितम्बर 2008, पृष्ठ 6

Bhaskar J.D. (2003) ; Unemployment : Some Policy Issues, Himalaya Publications, Bombay, p. 14.

वर्मा एम0पी0 (2002) ; शिक्षित बेरोजगारी की समस्या, 'सामाजिक विमर्श' राष्ट्रीय शोध पत्रिका, मराठवाड़ा वि0वि0, पृष्ठ 47

..... (2002) ; 'भारत', भारत सरकार नई दिल्ली, 2002, पृष्ठांकन– 358–359

Lavania M. K. (2010) ; Contemporary Indian Social Problems, College Book Depot (Raj.) Jaipur, p. 206.

Taneja S.R. (2008) ; Educated Unemployment in India, Jyoti Publications (Pvt. Ltd.), Andheri West, Bombay, p. 63.

त्रिपाठी एस. के. (2003) ; युवा वर्ग में शिक्षित बेरोजगारी की समस्या 'अनुसंधानिका' शोध पत्रिका, गाजियाबाद, पृष्ठ 132

वर्मा ओ. पी. (2003) ; भारतीय सामाजिक समस्याएंः 'बेरोजगारी की समस्या' विकास प्रकाशन विश्व बैंक बर्रा, कानपुर, पृष्ठ 2003

अटल योगेश (1992) ; शिक्षित बेरोजगारी की समस्या, 'सामाजिक विमर्श' षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, पृष्ठ 47

त्रिपाठी ए. के. (2003) ; युवा वर्ग में शिक्षित बेरोजगारी की समस्या 'अनुसंधानिका' शोध पत्रिका, गाजियाबाद, पृष्ठ 132

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies